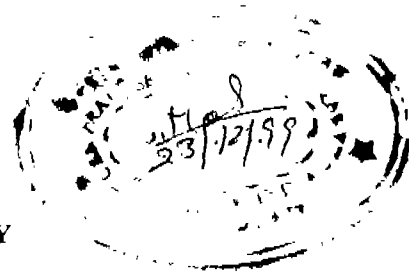



भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 223]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्तूबर 14, 1999/आश्विन 22, 1921

No. 223]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 14, 1999/ASVINA 22, 1921

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 अक्तूबर, 1999

अंतिम जांच परिणाम

विषय : रूस से पीटीएफई के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच

21/1/98-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए

क. क्रियाविधि :

1. प्रारंभिक निष्कर्षों के बाद निम्नलिखित क्रियाविधि का पालन किया गया है :

(क) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) रूस से पीटीएफई के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच के बारे में दिनांक 9-6-99 की अधिसूचना द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए थे और हितबद्ध पार्टियों से इसके प्रकाशन की तारीख से 40 दिन के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था।

(ख) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पक्षों को प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से 40 दिन के भीतर उक्त जांच परिणामों पर अपने विचार, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था।

(ग) प्राधिकारी ने नई दिल्ली में रूसी परिसंघ के व्यापार-प्रतिनिधि को प्रारंभिक जांच परिणामों की एक प्रति इस अनुरोध के साथ भेजी थी कि निर्यातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षों को उक्त जांच परिणामों पर अपने विचार प्रस्तुत करने की सलाह दी थी।

(घ) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों को 28-7-99 को मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया था। मौखिक रूप से अपने विचारों को प्रस्तुत करने वाले सभी पक्षों को मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। पार्टियों से अनुरोध किया गया था कि वे विरोधी पक्षों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां प्राप्त कर लें और उन पर अपनी प्रतिक्रिया, यदि कोई हो, प्रस्तुत करें। याचिकाकर्ता तथा मैसर्स गंग एसोसिएट्स के प्रतिनिधि मौखिक सुनवाई के समय मौजूद थे।

(ड) प्राधिकारी ने विभिन्न हितवद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी प्रमाणों तथा तर्कों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल सभी इच्छुक पक्षों को उपलब्ध कराई।

(च) मैसर्स एस पी एम इंटरनेशनल, जिन्होंने प्रारंभिक जांच परिणामों की घोषणा के बाद स्वयं को हितवद्ध पक्ष के रूप में पेश किया था, ने कुछेक मुद्दे उठाए हैं।

(छ) याचिकाकर्ता तथा अन्य हितवद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर प्रारंभिक जांच-परिणामों और/अथवा इन जांच परिणामों में विचार किया गया है।

(ज) अन्तःस्थान 46 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्य/आधार को खुलासा सभी जात हितवद्ध पार्टियों को किया गया था और उनके बारे में पूर्ण दिव्यगणियों पर इन जांच-परिणामों में विधिवत् विचार किया गया है।

(झ) इस अधिनियम में ***** का चिह्न याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना को प्रदर्शित करता है और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी भी उसे गोपनीय ही माना है।

(ख) विचाराधीन उत्पाद

मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद संरक्षण तथा इमलेशन ग्रैंडों में पोला-ट्रूटा फ्लूरा एथिलीन हैं। पी टी एफ ई इंजीनियरी थर्मोप्लास्टिक है जिसमें अद्भुत विशेषताएं हैं, जैसे रासायनिक निष्क्रियता, लो-को-एफ सीएंट ऑफ फ्रिक्शन, हीट-रेसिस्टेंस, एक्सीलेंट इलेक्ट्रिकल इंसुलेशन प्रापर्टीज, नोन टोक्सिक, नॉन इनफ्लेमेटबल एण्ड बैडरिम रेसिस्टेंस/ इन विशेषताओं के कारण पी टी एफ ई का प्रयोग रासायनिक, यांत्रिकी, विद्युतीय तथा इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में कई प्रकार से किया जाता है।

पी टी एफ ई का वर्गीकरण टैरिफ वर्गीकरण एच एस कोड नं. 3904.61 के तहत सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 39 के अंतर्गत किया गया है। किन्तु यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और किसी भी प्रकार से मौजूदा जांच के क्षेत्र में बाध्यकारी नहीं है।

(ग) समान वस्तुएं

क. आयातकों द्वारा दिए गए तर्क

1. प्रतिपाटन शुल्क एक अकुशल तथा केवल ऐसे घरेलू विनिर्माता को संरक्षण प्रदान करता है जिनका घटिया क्वालिटी देने तथा ग्राहक की आवश्यकताओं की अनदेखी करने का पुराना इतिहास होता है। उपभोक्ता उद्योग द्वारा यह प्रयास किया गया है कि जांच की जा रही वस्तु की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए याचिकाकर्ता को बाध्य किया जाए। तथापि याचिकाकर्ता इस पहलू पर अधिक ध्यान नहीं दे पाया। याचिकाकर्ता का दावा है कि वे रूस से सस्ते आयातों के साथ अनुचित प्रतिस्पर्धा के कारण आर एंड डी में पूंजी निवेश नहीं कर सके। लेकिन उन्हें ऊंची टैरिफ दरों का संरक्षण उपलब्ध था। इस समय भी उन्होंने आर एंड डी के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किए।

2. उपभोक्ता उद्योग के उत्पादों के अन्तिम प्रयोक्ताओं को जो कि सुरक्षा संस्थान, डी.आर.डी.ओ.लैब, एयरो स्पेस ऑरगनाइजेशन तथा कई अन्य सरकारी/अर्द्ध-सरकारी/गैर-सरकारी इकाईयां हैं, उनके लिए ऊंची कीमतें देनी पड़ेंगी। जैसाकि होता है, अधिकांश भारतीय उत्पादों के विनिर्माण की अधिक लागत तथा गुणवत्ता की ओर कम ध्यान देने के कारण उनकी कीमतें अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बहुत ऊंची होती हैं।

3. यदि केवल एक घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने की बात सोची जाएगी तो देश में पी टी एफ ई के सभी लघु उद्योगों के विनिर्माता बरबाद हो जाएंगे। मैसर्स आटोमैट इंडस्ट्रीज, अहमदाबाद ने याचिकाकर्ता द्वारा आपूर्ति किए गए पी टी एफ ई की गुणवत्ता घटिया होने की शिकायत की है, जो कि प्रयोग में लाने योग्य नहीं था।

ख. याचिकाकर्ता द्वारा तर्क :

1. पी.टी.एफ.ई. का उत्पादन तथा बिक्री भिन्न-भिन्न ग्रेडों में किया जाता है तथापि पीटीएफई के भिन्न-भिन्न ग्रेडों के उत्पादन के लिए प्रक्रिया, उपकरण और प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण अंतर नहीं है जिसका विनिर्माण विश्वभर में एक जैसी रासायनिक प्रक्रिया से किया जाता है। अतः घरेलू उद्योग तथा रूस द्वारा विनिर्मित पी. टी. एफ. ई. अपनी आवश्यक भौतिक तथा तकनीकी विशेषताओं में एक समान हैं।

2. एचएफएल द्वारा उत्पादित पी. टी. एफ. ई. की गुणवत्ता के बारे में मैसर्स गर्ग एसोसिएट्स का तर्क बेबुनियाद है क्योंकि वायर तथा केबल के घरेलू विनिर्माता पिछले अनेक वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को तुलना में एच एफ एल सामग्री को स्वीकार करते रहे हैं। एच एफ एल से खरीदे गए पी एफ ई की मात्रा जो कि प्रयोग में मैसर्स गर्ग एसोसिएट्स के समान है, नीचे दी गई है:

एचएफएल पीटीएफई की बिक्री	1996-97 मी०टन	1997-98 मी०टन	1998-99 मी०टन
वायर और केबल	28	15	13
सामान्य	22	38	38
कुल बिक्री	50	53	51
कुल मांग	75	85	85

3. सितम्बर, 97 से मार्च, 98 की अवधि के दौरान उन ग्राहकों को 15 मी० टन पीटीएफई की बिक्री की गई जिन्हें मैमर्स गर्ग एसोसिएट्स द्वारा विनिर्मित उत्पादों के समान उत्पादों की आवश्यकता थी। ऐसे क्रेताओं में ये शामिल हैं : आर० जे० इंडस्ट्रियल कारपोरेशन, गाजियाबाद फ्लोपाल, टॉक एंड एसोसिएट्स, मेरठ, पीटीएफई प्रोडक्ट्स, ट्रेस्टार इलेक्ट्रॉनिक्स, टी एंड एफ इंसुलेशन (प्रा०) लि०, युनाइटेड इंजीनियरिंग एंड जैन पोलिमर्स।

4. वर्ष 1990 में पीटीएफई की मांग केवल 400 मी० टन थी जबकि 1999 में भारत में पीटीएफई की मांग 800 मी० टन है। ऐसा भारत में पीटीएफई के उत्पादन के लिए एचएफएल के एप्लीकेशन डेवलपमेंट ग्रुप द्वारा किए गए अत्यधिक प्रयासों के कारण संभव हुआ है। आयातकों ने एचएफएल की मेहनत का केवल लाभ उठाया है। अतः यह तर्क कि कंपनी ने आर० एंड डी० में निवेश नहीं किया है। बिल्कुल अपरिपक्व कथन है।

5. पी०टी०एफ०ई० के सभी ग्राहक, जो मैमर्स गर्ग एसोसिएट्स के समान ही मदों का विनिर्माण कर रहे हैं, पिछले अनेक वर्षों से एचएफएल सामग्री का उपयोग कर रहे हैं, जिससे केवल यही सिद्ध होता है कि इस सामग्री की क्वालिटी अंतर्राष्ट्रीय आपूर्तियों की तुलना में भी स्वीकार्य है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मैमर्स गर्ग एसोसिएट्स द्वारा प्रयुक्त किए गए एचएफएल के पीटीएफई ग्रेड को स्वीकार किया है।

(ग) प्राधिकारी की स्थिति

1. जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 7 में बताया गया है, पीटीएफई का उत्पादन तथा बिक्री भिन्न-भिन्न ग्रेडों में होती है। तथापि पीटीएफई के भिन्न-भिन्न ग्रेडों के उत्पादन में प्रक्रिया, उपकरण अथवा प्रौद्योगिकी के रूप में महत्वपूर्ण अंतर नहीं होता है जिसका विनिर्माण विश्व भर में एक ही रासायनिक प्रक्रिया से होता है। पीटीएफई के भिन्न-भिन्न ग्रेड प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की फिनिशिंग प्रक्रिया की जाती है जो अधिकांशतः चरणों में होती हैं। अतः जांच के अधीन घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित पीटीएफई तथा इस जांच से संबंधित देश में विनिर्मित पीटीएफई अपनी भौतिक तथा तकनीकी विशेषताओं में एक समान हैं।

यह प्रमाणित करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीटीएफई रूस से निर्यातित पीटीएफई के ही समान है, उनकी विशेषताओं जैसे तकनीकी विशेषताएँ विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य तथा प्रयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है। कुछ हितवद्ध पक्षों ने आयातित तथा याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित पीटीएफई के बीच क्वालिटी के अंतर पर बल दिया है। लेकिन मूल विनिर्माण प्रक्रिया, प्रयोग तथा इस उत्पाद के समस्त उपयोग एक समान हैं। इनका पारस्परिक उपयोग बहुत हो सकता है और फलस्वरूप याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित उत्पाद, जो कि इस जांच का विषय है, के बीच बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा है।

इस बात पर विवाद करने योग्य कोई तर्क नहीं है कि भिन्न-भिन्न ग्रेडों में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीटीएफई में आयातित सामग्री से बिल्कुल मिलती-जुलती विशेषताएँ हैं और वाणिज्य तथा तकनीकी रूप से उसका उपयोग संबंधित देश से आयातित पीटीएफई के स्थान पर हो सकता है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन पीटीएफई को नियम 2(घ) के अर्थ में रूस से आयातित उत्पाद की समान वस्तु के रूप में माना गया है।

प्राधिकारी में समान वस्तु के मामले में प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि की है।

(घ) घरेलू उद्योग :

3. यह याचिका मैमर्स हिन्दुस्तान फ्लूरोकार्बंस लि०, हैदराबाद द्वारा दायर की गई है, जो भारत में इस उत्पाद का एक मात्र विनिर्माता है। रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय ने भी याचिकाकर्ता के एकल-उत्पादक के दर्जे की पुष्टि की है। अतः याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है और नियमों के अनुसार मौजूदा याचिका को फाइल करने की अपेक्षित स्थिति में है।

ड पाटन

क. निर्यातकों/आयातकों द्वारा तर्क

1. एच एफ एल के अभ्यावहन का तथ्यतः विरोध किया जाता है जिसमें, पाटनरोधी शुल्क बढ़ाकर 34, रू० प्रति किग्रा० किए जाने का अनुरोध किया गया है। यदि याचिकाकर्ता व्यापार में बने रहना चाहते हैं तो कम से कम 50 प्रतिशत तक लाभ कम करने के लिए कड़ी मेहनत करने की जरूरत है।

2. जांच अवधि अप्रैल 97 से जून 1998 तक (15 महीने) की थी। तब से अब तक विद्यमान परिस्थिति में व्यापक बदलाव आया है। अमरीकी डालर की तुलना में रुपए में लगभग 10 प्रतिशत का अवमूल्यन हुआ है (39.42 से 43.50 रू० तक) और आयात शुल्क 35 प्रतिशत से बढ़कर 38.5 प्रतिशत हो गया है जिसमें एस ए डी डी शामिल नहीं है। इससे याचिकाकर्ता को पहले ही लाभ मिल चुका है और उन्हें, आगे और राहत देने की जरूरत नहीं है।

3. याचिकाकर्ता ने 6 अमरीकी डालर प्रति किग्रा. की दर से रूसी पी टी एफ ई प्रदर्शित करने वाला जो कन्वेन्स ब्रीजक दिया है उससे अधूरे मॉड की बात जाहिर होती है। इस ब्रीजक को तर्क संगत नहीं बनाया गया है अर्थात् क्रेता ने सीमा शुल्क पत्तन पर आगम बिल दायर करने के बाद खेप की निकासी नहीं की। मैमर्स टॉक एण्ड एसोसिएट्स (प्रा०) लि० के पत्र की एक प्रतिलिपि संलग्न की गई है जिसमें यह कहा गया है कि चपबीजक पर सौदा पूरा नहीं हुआ है।

4. पी टी एफ ई एफ-4 डी ई के लिए प्रतिवादी के जर्मन संपर्क को प्रीबोर्लेब, रूस द्वारा की गई पेशकश की एक प्रति उत्तर के साथ संलग्न की गई है। डी एम 185 किग्रा. की दर पर 1.84 डी एम-1 अमरीकी डालर की मौजूदा विनिमय दर पर यह 8.97 अमरीकी डालर बनती है। इससे यह जाहिर होता है कि तारों और केबलों के प्रयोग में आने वाले रूसी पी टी एफ ई ग्रेडों की मौजूदा अंतराष्ट्रीय कीमत मोटे तौर पर 9 अमरीकी डालर/किग्रा. है। याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार यदि 34 रु० प्रति किग्रा. का पाटनरोध शुल्क जोड़ दिया जाता है तो पी आई डब्ल्यू सी के विनिर्माता यह सोचकर अंतराष्ट्रीय बाजार में कीमतों की प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जाएंगे कि भारतीय आयात शुल्क जर्मनी के आयात शुल्क से अधिक है और भारत में नौवहन लागत भी अधिक है।

5. किसेवो का प्रतिनिधित्व करने वाला एस पी एम इंटरनेशनल और सुमितोमो कारपोरेशन, जापान को रूस में दो पी टी एफ ई विनिर्माताओं में से सबसे बड़ा बताया जाता है। उन्होंने निर्दिष्ट प्राधिकारी को लिखे अपने दिनांक 3 अगस्त, 1999 के पत्र द्वारा इस चरण की जांच में अपनी रूचि व्यक्त की है। उनके विनिर्माता का पता है :—

किसेव चेपेत्स्की खिमीचेव्स्की काम्बीनेट,

613020 किसेव चेपेत्स्क,

किरोवस्काया ओबल पर पोजामी, 7

6. उपरोक्त पत्र में यह कहा गया है कि किरोवो और हेलोजन, दोनों अपने पी टी एफ ई के लिए इसी ग्रेड की संख्याओं अर्थात् एफ 4 पी एन का प्रयोग कर रहे हैं। उनकी बिक्री कीमत 7.80 अमरीकी डालर/किग्रा. सी आई एफ सी है। भारत में कुल वार्षिक जरूरत लगभग 800 मी.टन की है जिसमें से एच एफ एल लगभग 400 मी० टन का उत्पादन करता है। रूसी आयात अधिकतम 100 मी. टन बताया जाता है और शेष अन्य देशों से प्राप्त किया जाता है।

7. यह जांच पाटन करने के बारे में हेलोजन के खिलाफ है इसलिए किरोवो को इसके लिए क्यों दण्डित किया जाये जबकि उनकी कीमत काफी अधिक है, 800 मी.टन से अधिक की जरूरत की तुलना में लगभग 100 मी. टन की बिक्री जोकि एच एफ एल के उत्पादन का एक चौथाई है, को पाटन के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

8. रूस में यदि एक से अधिक विनिर्माता हैं और प्राधिकारी केवल एक विनिर्माता के मामले की जांच कर रहा है तो सम्पूर्ण रूसी निर्यातों के खिलाफ निर्णय देना उचित नहीं होगा।

(ख) याचिकाकर्ता के तर्क

1. घरेलू विनिर्माता के उत्पादन लागत और रूस से पाटन की जा रही सामग्री की पहुँच कीमत के बीच के अंतर को छोड़ दिया जाये तो भी सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत में जो अंतर है उसकी तुलना में 2990 रु० प्रति मी. टन की पाटनरोधी राशि काफी अपर्याप्त है।

2. घरेलू उत्पादन लागत (अर्थात् एफ 4 के समान सस्पेंशन ग्रेड) 725 रु०/किग्रा. है और पाठित सामग्री की पहुँच कीमत 735 रु० किग्रा. से 487 रु० किग्रा. के बीच की बैठती है। रूस से लाई गई सामग्री की पहुँच कीमत में सीमा शुल्क भी शामिल है जबकि 725 रु० किग्रा. याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत है न कि कीमत।

3. वाणिज्यिक बीजकों में दर्शाई गई अनुचित पहुँच कीमत की वजह से एच एफ एल पर इन कीमतों के बराबर कीमतें लाने का दबाव रहा है जिस से उसे भारी नुकसान हुआ है राष्ट्रीयोहित में ही प्रचालन को जारी रखा गया है।

4. भारतीय ग्राहकों को 6 अमरीकी डालर किग्रा. की दर से रूसी सामग्री देने की पेशकश भारत में कीमतें नीचे लाने के लिए पर्याप्त है। तथ्य यह है कि भारत में रूस से होने वाला आयात अन्य अंतराष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं की अलग-अलग लागत से भी कम दर किया गया है जो कि याचिकाकर्ता के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा है।

5. जर्मनी की प्रीबोर्लेब, रूस द्वारा की जाने वाली पेशकश 9 अमरीकी डालर/किग्रा. हो सकती है जो अंतराष्ट्रीय कीमत निर्धारित का प्रमाण नहीं हो सकती है। इस संदर्भ में याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी से अपील की है। रूस ने भारत को सामग्री देने की पेशकश की है जो 6 अमरीकी डालर/कि०ग्रा० से लेकर 6.75 अमरीकी डालर/कि०ग्रा० के बीच है। भारतीय प्रसंस्कर्ताओं द्वारा रूसी विनिर्माताओं से प्राप्त भाव दरें याचिकाकर्ता ने प्रस्तुत कर दी हैं।

6. याचिकाकर्ता के अस्तित्व के बनाए रखने में मदद करने और घरेलू विनिर्माता को उचित समान अवसर प्रदान करने के लिए याचिकाकर्ता अनुरोध करता है कि राष्ट्रीय हित में पाटनरोधी शुल्क को बढ़ाकर 34 रु०/कि०ग्रा० करके वर्तमान स्थिति ठीक की जाये।

(ग) प्राधिकारी के विचार :—

1. जैसाकि प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा 11 में बताया गया है, यह अभिमत व्यक्त किया जाता है कि पी टी एफ ई की विभिन्न ग्रेडों में लागत के हिसाब से कोई खास अंतर नहीं दिखता है और ये इसी सीमा में हैं चूंकि ग्रेन्यूलर ग्रेड में सुखाना और सुखाने के लिए अपेक्षित ऊर्जा शामिल होती

है, इसलिए इस अतिरिक्त ऊर्जा की लागत कमोवेश एक्जूस सोल्यूशन इमलशन ग्रैंड्स के लिए अतिरिक्त यौगिकों की लागत के बराबर है। इसलिए प्राधिकारी ने इस जांचों के लिए सभी ग्रैंडों (विचाराधीन उत्पाद के रूप में वर्णित) को समूह बढ़ा दिया है।

2. जर्मनी को प्रोबोलेब, रूस द्वारा की जाने वाली पेशकश तो अकेला ऐसा उदाहरण है जिसका जिक्र किया गया है। साक्ष्यों से अंतर्राष्ट्रीय कीमतों का रूझान प्रमाणित नहीं होता है।

3. यह देखा गया है कि किरोवो चेपेस्की ने इन जांचों में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में भाग लेने अथवा सहयोग करने में अपनी रुचि अथवा इच्छा व्यक्त नहीं की है। हालांकि यह कहा जाता है कि वे रूस में दोनों विनिर्माताओं में से बड़े हैं। भारत में उनके क्रेताओं ने कुछ तर्क पेश किए हैं और जांच के उम्र चरण में कुछ दावे किए थे जब, प्राधिकारी द्वारा हितबद्ध पार्टियों से केवल टिप्पणियां आमंत्रित की गई थीं। डब्ल्यूटीओ, करार के अनुच्छेद 6.10.2 में कहा गया है कि "उन मामलों में जहाँ प्राधिकारी ने अपनी जांच सीमित कर दी है— वहाँ वे फिर भी शुरू में चयन न किए गए उस निर्यातक अथवा उत्पादक के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण करेंगे जो जांच की कार्रवाई के दौरान विचार किए जाने हेतु उस सूचना के लिए समय पर आवश्यक सूचना प्रस्तुत करता है।" घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका में रूस में विनिर्माता/निर्यातक के रूप में केवल हैलोजन प्वाइंट स्टाक कम्पनी का ही नाम दिया गया था। संबंधित देश के दूतावास को अनुरोध किया गया था कि वह इस निर्यात/उत्पादक और भारत को संबंधित समान का निर्यात करने में रुचि रखने वाले रूस के अन्य निर्यातकों/आयातकों से इन जांचों की शुरुआत के बाद के चरण में प्राधिकारी द्वारा अग्रेषित प्रश्नावली में निर्धारित प्रपत्र में एवं ढंग से सूचना प्रस्तुत करने के लिए कहे जाचिका में उल्लिखित विनिर्माता से भिन्न किसी अन्य विनिर्माता से जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना का निर्धारित ढंग से कोई उत्तर न मिलने पर प्राधिकारी को अपनी जांच मैसर्स जेएससी हैलोजन तक सीमित करने के लिए बाध्य होना पड़ा प्राधिकारी यह भी अभिमत व्यक्त करते हैं कि प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रत्युत्तर में हालांकि मैसर्स एसपीएम इन्टरनेशनल ने कुछ तर्क प्रस्तुत किए हैं तथापि, ये तर्क काफी विलम्ब से प्राप्त हुए हैं और प्रश्नावली के औपचारिक प्रत्युत्तर के रूप में नहीं हैं। इसलिए वे इन जांचों के अंतिम चरण में स्वीकार्य नहीं हैं।

4. किनोवो द्वारा विनिर्मित और मैसर्स एसपीएम इन्टरनेशनल को आपूर्ति किए गए एफ-4 पीएन की औसत सीआईएफ कीमत 8 अमरीकी डालर/किग्रा. पायी गई है। (जैसाकि मैसर्स एसपीएम इन्टरनेशनल द्वारा प्रस्तुत किए गए बीजकों की प्रतियों से स्पष्ट है। यह प्राधिकारी द्वारा यह निर्धारित रूस में पीटीएफई की आकलित लागत से कम है और डीजीसीआईएस के आंकड़ों से निर्धारित सीआईएफ निर्यात कीमत से भी कम है। इसलिए आयातकों द्वारा दिया गया यह तर्क कि किरोवो की कीमत अधिक है, सही नहीं है।

5. आयातों की मात्रा के बारे में प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा-16 में यह बात नोट की गयी थी कि वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 (जून, 1998 तक) के दौरान पीटीएफई का कुल आयात 3,34,920 किग्रा०, 344,184 कि० ग्रा. और 4,75,528 किग्रा० का हुआ था। इस प्रकार यह वृद्धि वर्ष 1995-96 की तुलना में 1996-97 में 2.76% की 1996-97 की तुलना में वर्ष 1997-98 (जून, 1998 तक) 38% की थी। यह वृद्धि 1995-96 की तुलना में वर्ष 1997-98 में 41.9% की थी। इस प्रकार जांच अवधि के दौरान आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 (जून, 1998 तक) के दौरान रूस से किए गए आयातों की मात्रा 24,130 किग्रा०, 7000 किग्रा. और 40,665 किग्रा० थी। आयातों की मात्रा में वर्ष 1995-96 की तुलना में 1997-98 में 68% और वर्ष 1996-97 की तुलना में वर्ष 1997-98 में 480% की वृद्धि दर्ज हुई है। लेकिन वर्ष 1995-96 के आयातों की तुलना में वर्ष 1996-97 में आयातों में गिरावट आई है।

अन्य देशों से आयातों की मात्रा वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 (जून, 1998 तक) के दौरान क्रमशः 3,10,790 किग्रा०, 3,37,184 किग्रा० और 4,34,863 किग्रा० थी। कुल आयातों में रूस का हिस्सा वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 में क्रमशः 7.76%, 2.07%, और 9.35% था। इसलिए आयातों में रूसी हिस्से में वृद्धि होती रही।

6. यह देखा गया है कि वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 में पीटीएफई की मांग क्रमशः 746 मी० टन, 705 मी० टन और 797 मी० टन की थी। कुल मांग में आयातों का हिस्सा वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 में क्रमशः 44.7%, 48% और 59.5% था। याचिकाकर्ता का हिस्सा वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 में क्रमशः 55.2% 51.2% और 40% था। इस प्रकार कुल मांग में आयातों का हिस्सा बढ़ता रहा है जबकि भारतीय उद्योग के हिस्से में गिरावट आ रही है। याचिकाकर्ता द्वारा की गई बिक्री की मात्रा 1995-96 में 412 मी. टन से घटकर 1996-97 में 361 मी. टन और जांच अवधि के दौरान (अप्रैल, 97 से जून, 98 तक) यह घटकर 321.88 मी० टन तक हो गयी थी।

7. जैसाकि प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा 12 में उल्लेख किया गया है, प्राधिकारी यह पाते हैं कि रूस के निर्यातक ने निर्धारित प्रपत्र में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया और उसने निर्यात मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में सूचना प्रस्तुत नहीं की है। निर्धारित समय-सीमा के बाद प्राधिकारी को लिखे गए पत्र में कुछ सामान्य मुद्दे उठाए हैं और रूस में सामान्य मूल्य के बारे में याचिकाकर्ता के विचारों को आधारहीन और गलत बताया है। प्राधिकारी ने यह पाया है कि उन्होंने प्रश्नावली का जवाब देकर अपने तर्कों का पुख्ता बनाने का प्रयास नहीं किया है। बल्कि उन्होंने इस जांच में भाग लेने में अपनी अनिच्छा जाहिर की है इसलिए प्राधिकारी निर्यातक को अमहयोगी मानते हैं और उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना पर कार्रवाई की है।

8. याचिकाकर्ता ने आंकड़ों के संग्रहण और अमरीका के उद्योगों और अन्य अंतर्राष्ट्रीय विनिर्माताओं के साथ बातचीत के आधार पर उत्पादन के आकलित लागत का दावा किया है। यद्यपि निर्यातक ने यह कहते हुए इन आंकड़ों का विरोध किया है कि ये आंकड़े केवल अनुमान हैं तथापि उन्होंने अपने सामान्य मूल्य के बारे में कोई साक्ष्य नहीं दिया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी उपलब्ध सूचना के आधार पर आकलित लागत का निर्धारण करने के लिए विवश हुए हैं।

9. स्थानीय परिवहन, समुद्री भाड़ा और सीमाशुल्क संबंधी खर्चों का समायोजन करने के पश्चात् निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीआईएस द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर किया गया है। प्रारंभिक निष्कर्षों में निकाला गया पाटन मार्जिन सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर आधारित है जैसाकि उक्त निष्कर्षों में उल्लेख किया गया है। इस पाटन मार्जिन को इन निष्कर्षों में पुष्टि की गई है।

घ. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

(क) याचिकाकर्ताओं का अनुरोध

(i) एचएफएल ने वर्ष 1998 में वाणिज्यिक उत्पादन तक शुरू किया था जब पीटीएफई की मांग 500 टीपीए की संयंत्र क्षमता की तुलना में केवल 150 मी. टन की थी। एचएफएल ने भारत में पीटीएफई के अनुप्रयोग संबंधी प्रचलन बढ़ाने के लिए भारी निवेश किया है। जब ये प्रयास अपने परिणाम दर्शा रहे थे तब पिछले तीन वर्षों के दौरान देश में रूसी सामग्री के पाटन से एचएफएल के निष्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ा।

(ii) पीटीएफई के आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। एचएफएल बड़ी तेजी से अपने बाजार हिस्से को खोता रहा है और उसे अपनी सामग्री आयातित रेजिन की पहुँच कीमत के बराबर कीमत पर बेचने के लिए बाध्य किया गया है। प्रतिस्पर्धी कीमतों की पेशकश करके एचएफएल को अपने रेजिन को काफी घाटे में बेचना पड़ा।

(iii) एचएफएल के क्षमता उपयोग में गिरावट बिक्री में आई कमी की वजह से आ रही थी।

(iv) इसका श्रेय याचिकाकर्ता को जाता है कि वर्ष 1991 में 300 मी. टन वार्षिक का पीटीएफई का बाजार उनके विपणन और अनुप्रयोग विकास संबंधी प्रयासों द्वारा बढ़कर वर्तमान 850 मी० टन की बाजार मांग तक पहुँच गया है। भारत भूमि पर भारत से बाहर के आपूर्ति कर्ताओं द्वारा अपनी सामग्री की आपूर्ति करने का और याचिकाकर्ता के बाजार के छिपने का यही मुख्य कारण रहा है।

ख. प्राधिकारी का विचार

4. जैसाकि प्राधिकारी द्वारा प्रारम्भिक निष्कर्षों के शीर्षक अ के अंतर्गत पैरा 22 में अभिमत व्यक्त किया गया है :—

- (क) संबद्ध देश से आयातों की मात्रा में समग्र रूप से तथा भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में वृद्धि हुई है;
- (ख) याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से में कमी आई है जबकि आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है;
- (ग) याचिकाकर्ता का क्षमता उपयोग घट गया है;
- (घ) याचिकाकर्ता को उसके उचित बिक्री मूल्य से कम कीमतों पर बिक्री करने के लिए मजबूर किया गया है जिससे घाटा हुआ है;
- (ङ) आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट आ रही है;
- (च) घरेलू उद्योग के पास अत्यधिक अंतिम स्टॉक बचा हुआ है।

ड. अंतिम निष्कर्ष

5. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- (क) रूसी मूल के अथवा वहाँ से निर्यात किए गए पीटीएफई का सामान्य मूल्य से कम कीमत पर भारत को निर्यात किया गया है जिससे पाटन हुआ है;
- (ख) घरेलू उद्योग को क्षति हुई है;
- (ग) संबद्ध देश से आयातों के कारण क्षति हुई है।

6. प्राधिकारी रूसी मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद से संबंधित पैरा में यथानिर्दिष्ट सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमा शुल्क उपशीर्ष सं. 3904.61 के अंतर्गत आने वाले पीटीएफई के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। पाटनरोधी शुल्क प्रति मी० टन कॉलम 3 में उल्लिखित धनराशि होगी।

देश	उत्पादक/निर्यात का नाम	धनराशि
1	2	3 (रुपए)
रूस	जेएससीहेलोजन, किरावे-चेपेत्स्की तथा सभी अन्य उत्पादक/निर्यातक	5200

7. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर, सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथा निर्धारित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सभी सीमा शुल्क शामिल होंगे।

8. उपरोक्तानुसार प्राधिकारी दिनांक 9 जून, 1999 के प्रारम्भिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं।

9. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील, उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क उत्पाद शुल्क तथा स्वण (नियंत्रण) अपीलाय अधिकरण के समक्ष दायर की जाएगी।

MINISTRY OF COMMERCE

NOTIFICATION

New Delhi, the 13th October, 1999

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-Dumping investigations concerning import of PTFE from Russia.

21/1/98-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed subsequent to the preliminary findings
 - (a) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified Preliminary Findings vide notification dated 9/6/99 with regard to anti-dumping investigations concerning import of PTFE from Russia and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
 - (b) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the said findings within forty days from the date of the letter;
 - (c) The Authority also forwarded a copy of the preliminary findings to the Trade Representation of the Russian Federation in New-Delhi with a request that the exporters and other interested parties may be advised to furnish their views on the said findings;
 - (d) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 28/7/99. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rejoinders, if any. The petitioner and representatives of M/s Garg Associates were present at the oral hearing;
 - (e) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties;

- (f) M/s SPM International, who introduced themselves as an interested party after the announcement of the preliminary findings, raised certain arguments.
- (g) The arguments raised by the petitioners and other interested parties have been appropriately dealt with in the preliminary findings and/or these findings;
- (h) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same, have been duly considered in these findings;
- (i) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

2. The product under consideration in the present investigation is Poly tetra fluoro ethylene (PTFE) in suspension and emulsion grades. PTFE is an engineering thermoplastic with outstanding properties such as chemical inertness, low co-efficient of friction, heat resistance, excellent electrical insulation properties, non-toxic, non-inflammable and weathering resistance. Due to these characteristics PTFE finds many applications in chemical, mechanical, electrical and electronics industries.

PTFE is classified under Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975, under tariff classification H.S. Code No. 3904.61. The classification is however indicative only and in no way binding upon the scope of the present investigations.

C. LIKE ARTICLES

A. Arguments by importers:-

1. Anti-dumping duty provides protection to an inefficient and only domestic manufacturer who has a long history of poor quality and neglect of customer needs. Efforts have been made by the user industry to make the petitioner improve the quality of the product being investigated. However the petitioner was not able to devote much attention to this aspect. The petitioner's claim is that they were unable to invest amounts in R&D due to unfair competition from cheap imports from Russia. However, even when they enjoyed protection behind high tariff walls, there was no serious R&D effort.

2. The ultimate users of user industry products, which are defence undertakings, DRDO labs, aero-space organisations and many other Government/semi-government/private units, would have to pay higher prices for them. As it is, most Indian products are out-priced in the international arena due to high cost of manufacturing and scant attention to quality.

3. If injury to only one domestic industry were sought to be removed, all SSI manufacturers of PTFE in the country would be ruined. M/s Automat Industries, Ahmedabad, had complained of the poor quality of PTFE supplied by the petitioner, which was not usable.

B. Arguments by petitioner:-

1. PTFE is produced and sold in different grades. There is however no significant difference in terms of process, equipment and technology for the production of different grades of PTFE which is manufactured via the same chemical route the world over. Therefore PTFE manufactured by the domestic industry and in Russia are alike in their essential physical and technical characteristics.

2. The contention of M/s Garg Associates is unfounded with respect to the quality of PTFE produced by HFL since the domestic Wire and Cable manufacturers have accepted HFL material against international competition for the last several years. The quantity of PTFE purchased from HFL for application identical to M/s Garg Associates are as under:-

HFL PTFE SALES	1996-97 MT	1997-98 MT	1998-99 MT
Wire and Cable	28	15	13
General	22	38	38
Total Sales	50	53	51
Total Demand	75	85	85

3. 15 MT of PTFE (HFL) sales have been made during the period September'97 to March'98 to customers having needs of identical products as manufactured by M/s Garg Associates. Such buyers include RJ Industrial Corporation, Ghaziabad Flopal, Tonk & Associates, Meerut PTFE Products, Trestar Electronics, T&F Insulation (P) Ltd., United Engineering and Jain Polymers.

4. PTFE demand in 1990 was only 400 MT while PTFE demand in India in 1999 is 800 MT. This has been due to unstinted efforts by HFL's Application Development Group for the growth of PTFE in India. Importers have only enjoyed the fruits of HFL's labour. Hence, the contention that the company has not invested in R&D is totally an immature statement.

5. All customers of PTFE who are manufacturing items similar to those of M/s Garg Associates have been using HFL material for the past several years which only goes to prove that the quality of the material is acceptable even in comparison to international supplies. The international market has accepted HFL PTFE grade used by M/s Garg Associates.

C. Authority's position:-

1. As stated in para 7 of the Preliminary Findings, PTFE is produced and sold in different grades. There is however no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of different grades of PTFE which is manufactured via the same chemical route the world over. For obtaining different grades of PTFE, different kinds of finishing operations are employed which are mostly in batches. Therefore, PTFE manufactured by the domestic industry and in the country subject to this investigation are alike in their essential physical and technical characteristics.

In order to establish that PTFE produced by the domestic industry is a like article to that exported from Russia, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered. Some interested parties have stressed on the quality differences between the imported PTFE and that manufactured by the petitioner. However, the basic manufacturing process, applications and overall use of the product are similar. There is a high degree of interchangeability and consequently of competition between the imported product and that manufactured by the petitioner being the subject matter of this investigation.

There is no argument disputing that PTFE produced by the domestic industry in various grades has characteristics closely resembling the imported material and is substitutable by PTFE imported from the subject country both commercially and technically. PTFE produced by the domestic industry has been treated as like article to the product exported from Russia, within the meaning of Rule 2(d).

The Authority confirms the preliminary findings on Like Article.

D. DOMESTIC INDUSTRY:-

3. The petition has been filed by M/s. Hindustan Fluorocarbons Ltd., Hyderabad, who is the only manufacturer of this product in India. The Ministry of Chemicals and Fertilisers has also confirmed the single-producer status of the petitioner. The petitioner therefore constitutes domestic industry and has the required standing to file the present petition under the Rules.

E. DUMPING:-

A. Arguments by Exporters/Importers:-

1. The HFL representation requesting an increase in the anti-dumping duty to Rs 34/kg is sincerely opposed. If the petitioners wish to remain in business, they need to work hard to reduce the costs by at least 50%.

2. The period of investigation was April '97 to June 1998 (15 months). There has been considerable change in the conditions prevailing since. The rupee has devalued about 10% against the US dollar (Rs 39.42 to Rs 43.50), and import duty has gone up from 35% to 38.5%, not including SADD. This has already worked to the benefit of the petitioner and they deserve no further relief.

3. Convena invoice showing Russian PTFE at USD 6/kg given by the petitioner shows incomplete transaction. This invoice was not carried to its logical conclusion, i.e, the buyer did not clear the consignment after filing the Bill of Entry at the Customs port. A copy of the letter from M/s Tonk & Associates (P) Ltd has been enclosed stating that the transaction did not mature at all against the sub-invoice.

4. A copy of offer from Priborlab, Russia to the respondent's German contact for PTFE F-4 DE is enclosed with the rejoinder. At DM 16.5 kg, it works out to USD 8.97 at the current exchange rate of DM 1.84=1USD. This goes to show that USD 9/kg is roughly the current international price for Russian PTFE grades usable for wires and cables. If anti-dumping duty of Rs 34/kg is to be added as suggested by the petitioner, the indigenous manufacturers of PIWC are going to be out-priced in the international market considering that Indian import duty is higher than in Germany and the shipping costs to India are also more.

5. SPM International and Sumitomo Corporation, Japan represent Kirovo, stated to be the larger of the two PTFE manufacturers in Russia. They have expressed interest in the investigations at this stage vide their letter dated 3rd August, 1999, to the Designated Authority. The address of their manufacturer is :-

Kirov-Chepetsky Khimitchesky Kombinat,
613020 Kirov-Chepetsk,
Kirovskaya obl per Pozamy, 7.

6. It is stated in the above-referred letter that both Kirovo and Halogen use the same grade numbers for their PTFE i.e., F-4 PN. Their sale price is USD 7.80/kg Cif Sea. The total annual requirement in India is about 800 MT out of which HFL produces about 400 MT. Russian imports is stated to be a maximum of 100 MT and the balance is sourced from other countries.

7. The investigation is against Halogen for dumping so why should Kirovo be penalised for this while their price is much higher. The sale of about 100 Mt, one fourth of HFL production, against requirement of over 800 MT should not be viewed as dumping.

8. If there is more than one manufacturer in Russia and the Authority is examining the case of one manufacturer only, it would not be fair to give a decision against entire Russian exports.

B. Arguments by petitioner:-

1. The anti-dumping amount of Rs 2990/MT is far too inadequate compared to the difference in the normal value and the export price, leave alone the difference between the domestic manufacturer's cost of production and the landed price of the material being dumped from Russia.

2. The domestic cost of production (i.e., suspension grade equivalent to F4) is Rs 725/kg and the landed price of the dumped material is anywhere between Rs 375/kg to Rs 487/kg. The landed Russian material price is inclusive of customs duty while Rs 725/kg is the petitioner's cost of production and not price.

3. Because of the unreasonable landed price as shown in the commercial invoices, HFL has been under pressure to match these prices incurring heavy losses. Operations have been sustained only in the national interest.

4. The offer of Russian material at USD 6/kg to Indian customers is enough to bring down the price in India. The fact remains that the imports from Russia into India is at less than the variable cost of even other international suppliers which is a great threat for the survival of the petitioner.

5. The offer of Priborlab, Russia to Germany may be USD 9/kg which cannot be a proof for international pricing. The petitioner has appealed to the Authority in this regard. Russia has offered material to India, which is in the range of USD 6/kg-6.75/kg. The quotations received by the Indian processors from Russian manufacturers have been submitted by the petitioner.

6. To help the petitioner survive and provide a fair level playing field to a domestic manufacturer the petitioner requests that the present situation be corrected by increase of anti-dumping duty to Rs 34/kg in the national interest.

C. Authority's Position:-

1. As stated in para 11 of the preliminary findings, it is observed that the various grades of PTFE do not display any significant difference in terms of costs and are in the same range. Since the granular grade involves drying and energy required for drying, the cost of this additional energy is more or less equal to the additional additives cost for the aqueous solution emulsion grades. The Authority has therefore, grouped all grades (described as product under consideration) for these investigations.

2. The offer from Proborlab, Russia, to Germany is a single instance that has been cited. The evidence does not establish the trend in international prices.

3. It is observed that Kirovo-Chepetsky has not directly or indirectly expressed either interest or willingness to participate or cooperate in these investigations although it is stated that they are the larger of the two manufacturers in Russia. Their buyers in India have offered some arguments and made certain claims at this stage of the investigations when only comments were invited by the Authority from interested parties. Art. 6.10.2 of the WTO Agreement states that, "In cases where the authorities have limited their examination...they shall nevertheless determine an individual margin of dumping for any exporter or producer *not initially selected* who submits the necessary information *in time* for that information to be considered during the course of the investigation..." The petition filed by the domestic industry had given the name of only Halogen Joint Stock Company as a manufacturer/exporter in Russia. The Embassy of the subject country was requested to advise this exporter/producer as also other exporters/producers in Russia having interest in the export of the subject goods to India, to furnish information in the form and manner prescribed in the questionnaire forwarded by the Authority in the post-initiation stage of these investigations. In the absence of any response in the required manner to the Initiation Notification from any other manufacturer other than the said manufacturer cited in the petition, the Authority was constrained to limit its investigations to M/s JSC Halogen. The Authority also observes that although certain arguments have been offered by M/s S.P.M. International in response to the preliminary findings, these arguments are belated and are not in the form of a formal response to the questionnaire. Hence they are unacceptable at this penultimate stage of these investigations.

4. The average cif price of F-4PN manufactured by Kirovo and supplied to M/s SPM International is seen to be USD 8/kg (as evident from the copies of invoices that have been submitted by M/s SPM International). This is below the constructed cost of PTFE in Russia as determined by the Authority and is also below the cif export price determined from DGCIS data. The argument made by importers that Kirovo's price is higher, is therefore, incorrect.

5. Regarding the quantum of imports, Para 16 of the Preliminary Finding noted that the total imports of PTFE were 3,34,920 KG, 3,44,184 KG, and 4,75,528 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998). Thus the increase was 2.76% in 1996-97 over 1995-96 and 38% in 1997-98 (till June, 1998) over 1996-97. The increase was 41.9% in 1997-98 over 1995-96. Thus the quantum of imports have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from Russia was 24,130 KG, 7,000 Kg and 40,665 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998). The quantum of imports have gone up by 68% in 1997-98 over 1995-96 and by 480% in 1997-98 over 1996-97. There was however a decline in imports in 1996-97 over that of 1995-96.

The quantum of imports from other countries was 3,10,790 KG, 3,37,184 KG and 4,34,863 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998) respectively. The share of Russia in total imports was 7.76%, 2.07% and 9.35% in 1995-96, 1996-97 and 1997-98, respectively. Russian share in imports has therefore been on the rise.

6. It is observed that the demand for PTFE was 746 MT, 705 MT and 797 MT in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of imports in total demand was 44.7%, 48 and 59.5% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of the petitioner was 55.2%, 51.2% and 40% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. Thus the share of imports have been rising in total demand whereas the share of Indian industry has been declining. The quantum of sales made by the petitioner declined from 412 Mt in 1995-96, to 361 Mt in 1996-97 to 321.88 during the period of investigation (April'97 to June'98).

7. As stated in para 12 of the Preliminary Findings, the Authority observes that the exporter from Russia has not responded to the questionnaire in the prescribed format and has not furnished information relating to normal value, export price, and dumping margin. In a letter to the Authority received beyond the specified time-limit, they have raised some general issues and termed the petitioners views on normal value in Russia as groundless and incorrect. It is observed by the Authority that they have not attempted to substantiate their own arguments by responding to the questionnaire. Instead, they have expressed their unwillingness to participate in this investigation. The Authority therefore considers the exporter to be non-cooperative and has proceeded on best available information.

8. The petitioner has claimed the constructed cost of production in Russia based on data collection and interaction with industries in the US and other international manufacturers. While the exporter has contested this data, stating that it is only an approximation, they have not given any evidence of their normal value. In the circumstances the Authority has been constrained to determine the constructed cost based on the available information.

9. The export price has been determined on the basis of data published by DGCIS, after adjustments on account of local transportation, ocean freight and customs expenses. The dumping margin arrived at in the Preliminary Findings is based on the normal value and export price as stated in the said findings. This dumping margin is confirmed in these findings.

D. INJURY AND CAUSAL LINK:-

A. Petitioners submissions:-

i) HFL started commercial production in 1988 when the demand of PTFE was only 150 MT as against a plant capacity of 500 TPA. HFL has invested considerably to increase application usage of PTFE in India. While these efforts were showing results, dumping of Russian material in the country during the last three years adversely affected the performance of HFL.

- ii) There has been drastic increase in imports of PTFE. HFL has been losing its market share at a fast pace and has been compelled to sell its material comparable to landed price of imported resin. By offering competitive prices, HFL has had to sell its resin at considerable loss.
- iii) The capacity utilization of HFL has been dropping on account of drop in sales.
- iv) It is to the credit of the petitioner that a PTFE market of 300MT/annum in 1991 has been enlarged by their marketing and application development efforts to the present market demand of 800MT. This has been the main reason for suppliers outside India to supply their material on Indian soil and take away the market from the petitioner.

B. Authority's Position:-

4. As observed by the Authority in Para 22 under heading J of the Preliminary Findings:-
- (a) the quantum of imports from the subject country has increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India;
 - (b) the market share of the petitioner has gone down while that of imports has increased;
 - (c) the capacity utilisation of the petitioner has gone down ;
 - (d) the petitioner has been forced to sell at prices below its fair selling price resulting in losses;
 - (e) imports are undercutting the prices of the domestic industry;
 - (f) the domestic industry is left with substantial closing stocks.

E. FINAL FINDINGS

5. The Authority after considering the foregoing, concludes that:

- (a) PTFE originating in or exported from Russia has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered injury;
- (c) injury has been caused by imports from the subject country.

6. The Authority recommends imposition of definitive Anti-dumping duty on all imports of PTFE falling under customs sub-heading no. 3904.61, of the Customs Tariff Act as specified under the para relating to product under consideration originating in or exported from Russia. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in col. 3 per MT.

Country	Name of the producer/exporter	Amount
1.	2.	3. (Rs.)
Russia	JSC Halogen, Kirov-Chepetsky & all other producers/exporters	5200

7. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

8. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 9th June, 1999.

9. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority